DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

छंद

LIVE 10-06-2024 05:00 PM

छन्द शास्त्र परिचयः

छन्द शास्त्र अत्यन्त प्राचीन शास्त्र है आचार्य पिंगल छन्दशास्त्र के प्रथम आचार्य हुए इनकी पुस्तक 'छन्दसूत्रम्' (पिंगल सूत्रम्) के नाम से प्रसिद्ध है।

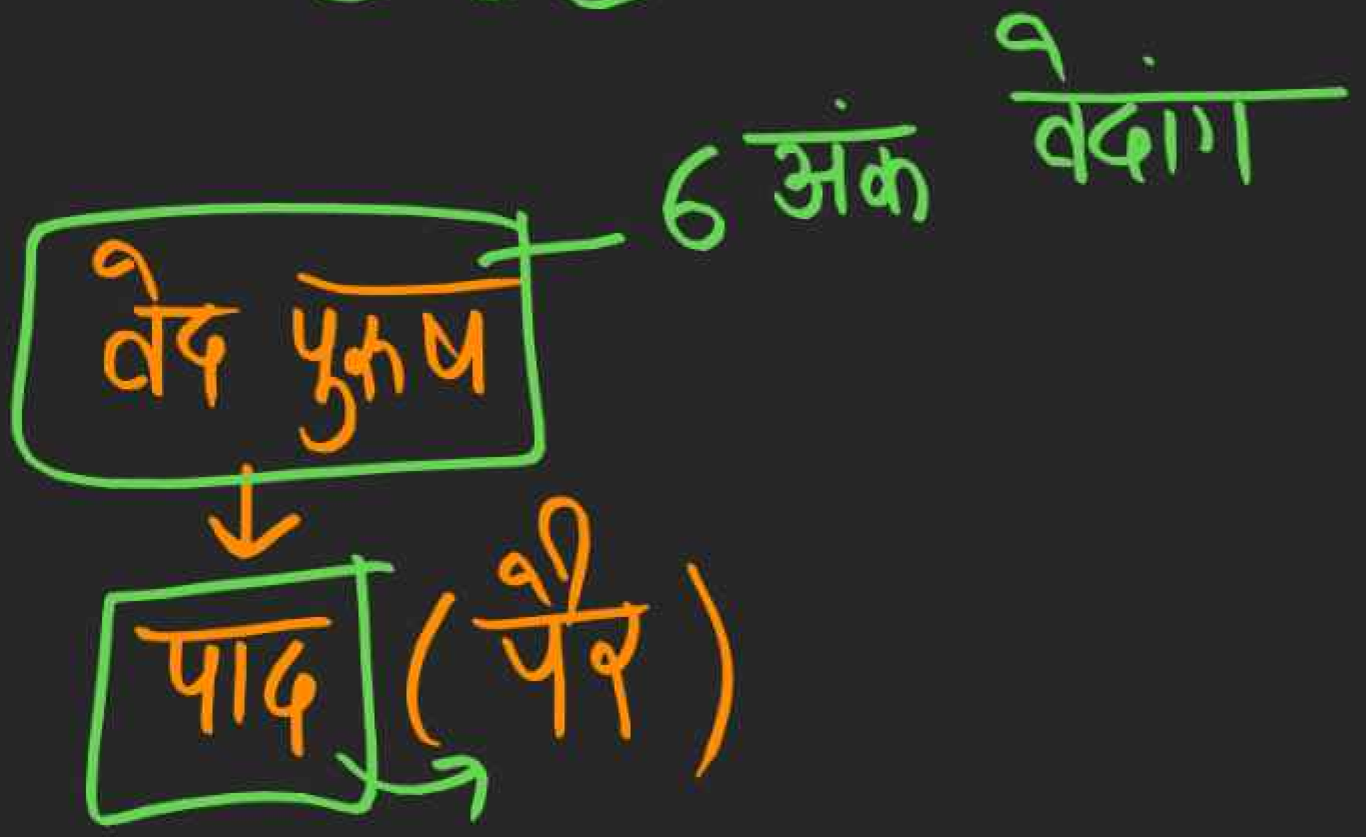

छन्द की परिभाषा

निश्चित वर्ण या मात्राओं को पाद या चरण मानकर रचे गये वाक्य या वाक्य समूह को छन्द कहते हैं। श्लोक शब्द का प्रयोग पहले अनुष्टुप् छन्द के लिए होता था, आजकल तो व्यवहार में संस्कृत भाषा में छन्द सामान्य के लिए श्लोक शब्द का प्रयोग होता है। पद्य शब्द की भी ऐसी ही स्थिति है।

पाद- ज्ञेय पादः चतुर्थांशः अर्थात् श्लोक के चौथे भाग को पाद कहा जाता है।

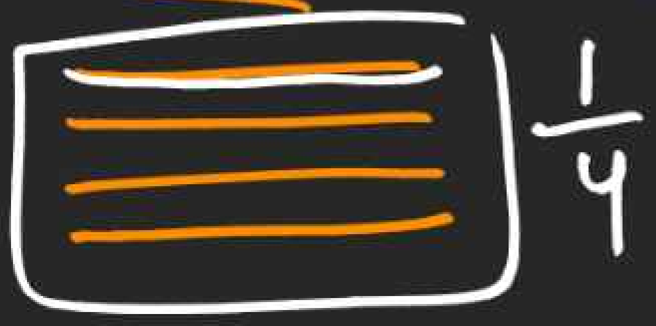

- छन्द के भेदः छन्द दो प्रकार के होते हैं-

(1) वर्णिक (वृत्त) छन्द — वर्णों की संख्या और क्रम

(2) मात्रिक (जाति) छन्द — मात्रा की संख्या एवं क्रम

वर्णिक छन्द-

जिन छन्दों के चरण या पाद वर्णों की संख्या पर निर्भर हों, उन्हें वर्णिक छन्द कहते हैं। जैसे- इन्द्रवज्रा, वंशस्थ आदि। वृत्त तीन प्रकार का होता है।

- **समवृत्त-** जिन छन्दों के चारों चरणों में मात्राएँ या वर्ण समान संख्या में होते हैं, उन्हें समवृत्त छन्द कहते हैं

जैसे- अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा आदि।

• **अर्द्धसमवृत्त -** जिन छन्दों के प्रथम व तृतीय में तथा द्वितीय व चतुर्थ चरणों में मात्राओं अथवा वर्णों की संख्या समान होती है, उन्हें अर्द्धसमवृत्त कहते हैं।

1-3 2-4

जैसे- वियोगिनी, पुष्पिताग्रा, हरिणप्लुता।

• **विषमवृत्त -** जित्त छन्दों के चारों चरणों में मात्राओं अथवा वर्णों की संख्या भिन्न-भिन्न हो उन छन्द को विषमवृत्त या विषम वर्णिक छन्द कहते हैं। **जैसे -** आर्या।

• मात्रिक छन्द-

जिन छन्दों के पाद या चरण मात्राओं की संख्या पर निर्भर हो, उन्हें मात्रिक छन्द कहते हैं।

सीमा
2+2 = 4

त्रिशाल
इ आ अ = 4
(1+2+1)

जैसे - आर्या।

मात्रा- स्वर वर्ण का निश्चित उच्चारण काल मात्रा कहा जाता है इसके दो भेद होते हैं-

(1) लघु (2)
(2) दीर्घ गुरु

ह्रस्व — अ इ उ ऋ (1)

दीर्घ — आ ई ऊ ए ऐ ओ औ (2)

• लघु की मात्रा जहाँ अ, इ, उ, ऋ, लृ का उच्चारण हो वहाँ ह्रस्व/लघु की मात्रा लगती है इसके लिए वर्ण के ऊपर (1) एक लकीर लगा देते हैं।

जैसे- अमर ऋषि शुभ लृक

।।।	।।	।।	।।
3	2	2	2

गुरु की मात्रा-

* जहाँ आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ की मात्रा लगी हो तो वहाँ गुरु की मात्रा लगती है। (S)

जैसे- आधारा, राकेशः

SSS SSS

= 6 = 6

* जिस वर्ण में अनुस्वार तथा विसर्ग लगा हो तो गुरु की मात्रा होती है।

जैसे- संयम, संयोग, रामः।

S I I   S S I   S S

4   5   4

कृषि   मातृः

(दीर्घ ऋ)

- संयुक्त वर्ण से पहला वर्ण गुरु होता है, जब दो या दो से अधिक व्यंजन वर्ण एक जगह मिल जाते हैं, वह संयुक्त वर्ण होता है।

जैसे- विज्ञान, भिक्षुका।

S S I S I S

ज्ञ = ज् + ञ्

क्ष = क् + ष्

- हलन्त व आधा वर्ण में मात्रा नहीं लगाते हैं, हलन्त व आधा वर्ण से पूर्व का वर्ण गुरु होता है।

जैसे जगत् ।

।ऽ

- संयुक्त वर्ण में अन्तिम वर्ण के उच्चारण के अनुसर मात्रा लगती है।

क्ष = । क्षि = । क्षेम = ऽ ।

- छन्द के नियम के अनुसार चरण का अन्तिम वर्ण बदल जाता है अर्थात् लघु होने पर भी दीर्घ हो जाता है।
- संयुक्ताक्षर = क्ष = क् + ष

= त्र = त् + र

= ज्ञ = ज् + ञ

- अवग्रह (ऽ) की कोई गिनती नहीं होती है, सम्बोधन के चिन्ह का भी कोई महत्त्व नहीं होता है।
- दीर्घ या गुरु के लिए वर्ण के ऊपर ऽ का चिन्ह लगा देते हैं।

• ह्रस्व वर्ण कब दीर्घ हो जाता है।

(i) अनुस्वार तथा विसर्ग लगने पर अं, अः   कंगन = ऽ

(ii) संयुक्त वर्ण से पूर्व आने पर

(iii) छन्द के लक्षण के अनुसार अन्तिम ह्रस्व भी दीर्घ हो जाता है।

जैसे नक्षत्र, नक्षत्रम् ।

गण- वर्णों या मात्राओं के समूह को गण कहते हैं, गण दो प्रकार के होते हैं। वर्णात्मक और मात्रात्मक।'

वर्णात्मक गण - तीन वर्णों के समूह को वर्णात्मक गण कहते हैं। तीन वर्णों का समूह एक गण होता है।

यमाताराजभानसलगा।

(1) (2) (3) (4) (5) (6) (7) (8) लघु गुरु

गण :- 8 यगण, मगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण

गण सूत्रम् - यमाताराजभान सलगाः

गण आठ होते हैं। एक गण में तीन वर्ण आते हैं। गण आठ होते हैं।

1. यगण - यमाता- ISS - यशोदा ⇒ आदिलघु
2. मगण – मातारा – SSS - मान्धाता ⇒ सभी गुरु
3. तगण - ताराज - SSI -तेजस्वि ⇒ अन्त्य लघु
4. रगण - राजभा- SIS -राधिका ⇒ मध्य लघु
5. जगण - जभान - ISI - जयन्त ⇒ मध्य गुरु
6. भगण - भानस - SII - भारत ⇒ आदि गुरु
7. नगण - नसल - III -रमन ⇒ सभी लघु
8. सगण - सलगा- IIS -सरला ⇒ अन्त्य गुरु

मन

▶ जिस गण का स्वरूप याद करना हो उस गण को लिख देते हैं तथा उसके बाद दो अक्षर जोड़ देते हैं।

जैसे यगण यमाता

बाद में उनके ऊपर लघु / गुरु का चिन्ह लगा देते हैं।

भजसा = गुरु

यरता = लघु

सूत्र- "आदिमध्यावसानेषु भजसा यान्तिगौरवम्
यरता लाघवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम्"

आदिगुरु – भगण- S I I

मध्यगुरु - जगण - I S I

अवसानगुरु - सगण - I I S

यरता - यगण – I S S

- रगण -S I S

- तगण – S S I

मनौ - मगण – S S S

- नगण - I I I

• यति या विराम-

छन्द के उच्चारण में मधुरता लाने के लिए जहाँ रुका जाता है, उसे यति कहते हैं। सभी छन्दों के पाद के अन्त में यति होती है। कुछ छन्दों के बीच में भी यति होती है।

छन्दों के लक्षण और उदाहरण

मात्रिक छन्दः मात्रिक छन्द में मात्रा की गणना होती है लघु की एक तथा गुरु की दो मात्राएँ होती हैं-

Mon